63

जब आपके मन में सवाल हों

बाइबल पाठ #26

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक (क्रमश:)।

न. यरूशलेम की अन्तिम यात्रा (लूका 17:11क)।

4. तलाक पर सवाल-और विवाह पर शिक्षा (मत्ती 19:3-12; मरकुस 10:2-12)।
5. बच्चों के विषय में गलतफहमी और बच्चों की तरह होने पर शिक्षा (मत्ती 19:13-15; मरकुस 10:13-16; लूका 18:15-17)।
6. अनन्त जीवन के विषय में प्रश्न-और धन पर शिक्षा (जवान धनी अधिकारी की कहानी) (मत्ती 19:16-26; मत्ती 10:17-27; लूका 18:18-27)।
7. प्रतिफल पर एक प्रश्न-और दाख की बारी में मजदूरों के दृष्टांत समेत (मत्ती 20:1-16) परमेश्वर की आशिषों पर शिक्षा (मत्ती 19:27-30; मरकुस 10:28-31; लूका 18:28-30)।

परिचय

कुछ लोग बाइबल क्लास में प्रश्न पूछने से हिचकिचाते हैं। शायद उन्हें लगता है कि इससे क्लास में बाधा पड़ेगी। शायद उन्हें डर होता है कि दूसरे लोग कहेंगे कि वे अज्ञानी हैं और उन्हें कुछ मालूम नहीं है। जो भी कारण हो, उनके प्रश्न बिन पूछे और अनुत्तरित रह जाते हैं। परन्तु योग्य शिक्षक प्रश्न पूछे जाने का स्वागत करते हैं। वे इस बात को समझते हैं कि प्रश्न पूछना सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य भाग है। प्रश्न से पता चलता है कि प्रश्नकर्त्ता के मन में क्या है। एक स्पष्ट प्रश्न से यह पता चलता है कि प्रश्नकर्त्ता उन्हें सीखने को तैयार है।

हमारे पिछले पाठ में, यीशु ने यरदन नदी के पूर्वी तट से होते हुए, फसह के लिए जाने वाले यात्रियों से खचाखच भरे रास्ते से यरूशलेम का अन्तिम दौरा किया था। चलते-चलते, वह सिखाता भी रहा (मरकुस 10:1)। उसके शत्रु (मत्ती 19:3, 7), उसके चेले (मत्ती 19:25, 27; मरकुस 10:10) और दूसरे लोग उससे प्रश्न पूछ रहे थे (मत्ती 19:16, 20)।

यद्यपि मसीह का मन क्रूस पर लगा हुआ था (लूका 12:50; मत्ती 20:17-19), परन्तु उसने प्रश्न पूछने वालों को निराश नहीं किया। कोई भी प्रश्न ऐसा नहीं था, जिसका उत्तर उसने न दिया हो। कोई प्रश्नकर्त्ता यह नहीं कह सकता था कि ''गुरु ने मुझे नज़रअन्दाज किया; उसे मेरी परवाह नहीं है।''

इस पाठ में उस अन्तिम यात्रा के समय पूछे गए कुछ प्रश्न शामिल हैं। शायद यीशु के उत्तरों से उन प्रश्नों का उत्तर देने में सहायता मिल जाए, जो आपके मन में हैं। कम से कम आप उनसे यह तो सीख सकेंगे कि प्रश्न पूछना किसी भी प्रकार गलत नहीं है और यह कि प्रभु उनका उत्तर ढूंढ़ने में आपकी सहायता कर सकता है।

तलाक पर ज़्या कहना है? (मज़ी 19:3-12; मरकुस 10:2-12)[1]

फरीसियों ने पूछा (मत्ती 19:3; मरकुस 10:2)

मसीह के साथ चल रहे उसके कट्टर विरोधी, फरीसी भी थे। कुछ समय पहले, उन्होंने उससे पूछा था, ''परमेश्वर का राज्य कब आएगा?'' (लूका 17:20)।[2] अब उन्होंने उसे एक और प्रश्न पूछकर रोका। ''तब फरीसी उस की परीक्षा करने के लिए पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?'' (मत्ती 19:3)। अधिकतर प्रश्न स्पष्ट मन वाले लोगों द्वारा उत्तर जानने के लिए किए जाते हैं, पर कभी-कभी कोई प्रश्न अलग ही उद्देश्य से किया जाता है। यह प्रश्न एक फंदे की तरह था, जो कई दिशाओं से घेर सकता था।

मूसा ने लिखा था कि यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी में ''कुछ लज्जा की बात'' पाए, तो वह उसे ''त्याग-पत्र लिखकर'' दे सकता है[3] और उसे निकाल सकता है (व्यवस्थाविवरण 24:1)। व्यवस्था के विद्वान ''कुछ लज्जा की बात'' के अर्थ पर एकमत नहीं थे। विचार की दो मुख्य पाठशालाएं पाई जाती थीं: हिल्लेल की पाठशाला और शम्मई की पाठशाला। हिल्लेल की पाठशाला का कहना था कि मूसा के शब्दों में पुरुष को किसी मामूली अपराध के लिए पत्नी को त्याग-पत्र या तलाक देने की अनुमति थी: उदाहरण के लिए, यदि उससे रोटी जल जाए या उसे कोई और सुन्दर या जवान स्त्री मिल जाए। शम्मई की पाठशाला की शिक्षा थी कि तलाक की अनुमति केवल दैहिक पाप होने पर थी। फरीसियों का दावा था कि मसीह को दोनों में से किसी एक का पक्ष लेना चाहिए था, जिससे विरोधी विचार रखने वाले उससे अपने आप ही अलग हो जाएंगे।

इसके अलावा, यीशु ने पहले तलाक के विरुद्ध सिखाया था (मत्ती 5:31, 32)। यदि फरीसी यह साबित कर सकते कि वह मूसा की व्यवस्था से सहमत नहीं था, तो वे उसे लोगों की नज़र में गिरा सकते थे। उन्होंने तर्क दिया कि मसीह *जो भी* उत्तर दे, उससे वह स्वयं को दोषी ठहराएगा। यह जोखिम भरी स्थिति थी।[4]

यीशु ने उत्तर दिया (मत्ती 19:3-6; मरकुस 10:6-9[5])

सिखाते हुए, मुझे प्रश्नों का उत्तर देना अच्छा लगता है-परन्तु तलाक पर पूछे जाने वाले प्रश्न मुझे पसन्द नहीं हैं। यदि किसी क्लास में पूछा जाने वाला पहला प्रश्न इसी विषय पर हो, तो हो सकता है कि मैं चिल्ला पड़ूं, ''मुझे आराम से शुरू करने दें!'' परन्तु, यीशु ने उत्तर देने में हिचकिचाहट नहीं की। वह विचार की किसी भी वर्तमान पाठशाला का पक्ष लेने से इनकार कर उनके फंदे से बच गया। इसके बजाय वह विवाह के लिए उत्पत्ति 1 और 2 में बताई गई परमेश्वर की मूल योजना में चला गया:

> उस ने उत्तर दिया, क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा (उत्पत्ति 1:27), कि इस कारण मुनष्य अपने माता-पिता को छोड़कर वे दोनों एक तन होंगे (उत्पत्ति 2:24)? सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं: इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे (मत्ती 19:4-6)।[6]

फरीसियों ने पूछा था कि व्यवस्थाविवरण 24 में मूसा ने क्या लिखा था। मसीह ने उन्हें इस विषय पर मूसा द्वारा लिखी गई पहली बात याद दिलाई। इस तरह उसने दिखाया कि उसमें और उस महान अगुवे में कोई विरोधाभास नहीं था।

फरीसियों ने पूछा (मत्ती 19:7)

घबराए हुए फरीसियों ने पूछा, ''फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, त्याग-पत्र देकर उसे छोड़ दे?'' (मत्ती 19:7)। अन्य शब्दों में, ''यदि परमेश्वर चाहता था कि विवाह स्थाई हो, तो उसने मूसा से व्यवस्थाविवरण 24:1-4 क्यों लिखवाया?''[7]

यीशु ने जवाब दिया (मत्ती 19:8, 9)

यीशु ने उत्तर दिया, ''मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था'' (मत्ती 19:8)। फरीसियों ने कहा कि मूसा ने तलाक की *आज्ञा दी* थी (आयत 7), परन्तु मसीह ने कहा, मूसा ने इसकी *अनुमति दी* थी (आयत 8)-दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है।

बाइबल के ''आरम्भ से,'' यह स्पष्ट था कि विवाह के लिए परमेश्वर की इच्छा स्थाई होने की थी (आयत 8; उत्पत्ति 2:24)। पुराने नियम के अन्त में, परमेश्वर ने कहा था, ''मैं स्त्री-त्याग से घृणा करता हूं'' (मलाकी 2:16)। यदि यह बात थी, तो फिर तलाक की अनुमति ही क्यों दी गई? यीशु ने कहा कि यह उनके ''मन की कठोरता'' के कारण था। अवयस्क बच्चों को कई बार ऐसी स्वतन्त्रता दी जाती है, जो वयस्क लोगों को सहन नहीं होती। इसी प्रकार, इस्राएलियों के साथ परमेश्वर के व्यवहारों में, आरम्भ में, उसने उस बात की अनुमति दे दी, जिसकी वास्तव में उसने स्वीकृति नहीं दी थी।[8] हमें प्रेरितों 17:30 का

स्मरण कराया जाता है: ''इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।''[9]

यदि फरीसियों का यह विचार था कि वे विवाह और तलाक पर मसीह को अपनी पहली शिक्षा वापस लेने के लिए विवश कर देंगे (मत्ती 5:31, 32), तो वे गलत थे। उसने एक अपवाद जोड़ते हुए पहले कही गई बात ही दोहराई: ''और मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से, अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो उस छोड़ी हुई से ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है'' (मत्ती 19:9)।[10]

फरीसी एक बार फिर यीशु को अपने जाल में नहीं फंसा सके। नि:संदेह उनके चेहरे फिर क्रोध से लाल थे।

चेलों ने पूछा; यीशु ने उत्तर दिया; चेलों ने पूछा (मरकुस 10:10-12; मत्ती 19:10)

बाद में, जब मसीह अपने चेलों के साथ अकेला था,[11] तो वे उससे इसी विषय पर पूछते रहे (मरकुस 10:10)। यीशु ने वही दोहराया, जो उसने किसी पुरुष के अपनी पत्नी को तलाक देने के बारे कहा था (मरकुस 10:11)। फिर उसने स्त्री द्वारा अपने पति को तलाक देने की बात शामिल करने के लिए अपने विचारों को विस्तार दिया: ''और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से ब्याह करे, तो वह व्यभिचार करती है'' (मरकुस 10:12)। यहूदियों में, तलाक पुरुष का विशेषाधिकार होता था, परन्तु विशेष परिस्थितियों में, अपने पति को तलाकनामा देने के लिए विवश करने के लिए स्त्री न्यायालय में जा सकती थी।[12] अन्यजातियों में, स्त्री द्वारा तलाक देने की बात अधिक सामान्य थी (देखें 1 कुरिन्थियों 7:13)।[13]

आज लोग विवाह की स्थिरता पर मसीह की शिक्षा के ज़ोर देने को समझ नहीं पाते, पर चेलों को यह बात समझ आ गई थी। उन्होंने कहा, ''यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है, तो ब्याह करना अच्छा नहीं'' (मत्ती 19:10)। अन्य शब्दों में, ''दुखी विवाहित जीवन में फंसने का अवसर लेने के बजाय विवाह न करना ही अच्छा है।'' बाइबल को न जानने वाले और सांसारिक सोच रखने वाले लोग अभी भी तर्क देते हैं कि पुरुष और स्त्री का विवाह की जीवनभर की प्रतिबद्धता के बजाय व्यभिचार में (कुंवारे रहकर) एक साथ रहना अच्छा है।[14]

यीशु ने उत्तर दिया (मत्ती 19:11, 12)

यीशु ने उत्तर दिया, ''सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिन को यह दान दिया गया है'' (आयत 11)। ''इस कथन'' का पूर्ववर्ती चेलों का यह दावा है कि ''ब्याह करना अच्छा नहीं।'' जब मसीह ने कहा कि ''सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते'' तो उसने इस बात को माना कि सब लोग कुंवारे नहीं रह सकते। पहले उसने कुंवारे

रहने के लिए प्रकृति द्वारा विवश किए गए लोगों की बात की (जो जन्म से ही शारीरिक सम्बन्ध बनाने के अयोग्य होते हैं; आयत 12क), और फिर उसने कुंवारे रहने के लिए मनुष्य द्वारा विवश किए गए लोगों की बात की (जिन्हें मनुष्यों द्वारा बधिया किया गया होता है[15]; आयत 12ख)।

अन्त में, उसने उनकी बात की, ''जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने आपको नपुंसक बनाया है'' (आयत 12ग)। यह उन लोगों के लिए नहीं कहा गया, जिन्होंने अपने शरीर बधिया करने के लिए दे दिए हैं, क्योंकि शरीर का सम्मान परमेश्वर के ''मन्दिर'' के रूप में ही किया जाना चाहिए (देखें 1 कुरिन्थियों 6:19; रोमियों 12:1)। बल्कि यह उनकी बात थी जो जान बूझकर कुंवारा रहना चुनते हैं, ताकि वे अपना जीवन परमेश्वर और मनुष्य की सेवा में दे सकें (देखें 1 कुरिन्थियों 7:32-34)।[16] यीशु ने कहा, ''जो इसको ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे'' (मत्ती 19:12घ)। साफ़ कहें तो हम में से अधिकतर को परीक्षा के बिना बधिया होकर कुंवारे रहने का जीवन नहीं ''दिया गया है'' (आयत 11); जीवन साथी का होना बेहतर है (देखें 1 कुरिन्थियों 7:2, 7)।

हम मसीह द्वारा अपने चेलों को दिए गए उत्तर को इस प्रकार संक्षिप्त कर सकते हैं: ''विवाह करना अच्छा है, पर जो विवाह करते हैं वे समझ लें कि यह जीवनभर के लिए है!''

बच्चों के बारे में ज़्या कहना है? (मत्ती 19:13-15; मरकुस 10:13-16; लूका 18:15-17)[17]

बच्चे महत्वपूर्ण हैं

यीशु के किसी जगह रुकने पर, माताएं अपने बच्चों को उसके पास लाईं, ताकि वह उन्हें आशीष दे। माताओं का प्रार्थना के लिए अपने बच्चों को धार्मिक अगुओं के पास लाना कोई नई बात नहीं थी।[18]

मसीह के चेलों ने उन स्त्रियों को डांटा। शायद उन्हें लगा कि माताएं अतिविश्वासी हैं। हो सकता है कि वे यीशु की रक्षा करने की कोशिश कर रहे हों, जिसे (उनके विचार से) बच्चों पर अपना समय खराब करने के बजाय ''दूसरे महत्वपूर्ण काम करने'' थे। यीशु ने डांटने वालों को डांटा: ''बालकों को मेरे पास आने दो: और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है'' (मत्ती 19:14)।

हर माता-पिता के मन को छू लेने वाला दृश्य मसीह का उनके बच्चों के लिए प्रार्थना करना है: ''और उस ने उन्हें गोद में लिया,[19] और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी''[20] (मरकुस 10:16)। एच. आई. हेस्टर ने लिखा है, ''... याद रखें कि बच्चों का वह मान्यता या दर्जा नहीं था, जो हम उन्हें देते हैं। वास्तव में, जितना ध्यान और स्नेह आज बच्चों का होता है, उसका श्रेय यीशु मसीह की शिक्षाओं को ही दिया जा सकता है।''[21] रोबर्ट कल्वर ने सहमति जताई कि ''लोगों के सम्भाल और स्नेह में यीशु की शिक्षा से पहले बच्चों को उनका सही स्थान नहीं मिला था।''[22]

बच्चों जैसा होना आवश्यक है

मसीह ने फिर बच्चों जैसा (निरभिमान, भरोसा करने वाले और सीखने के योग्य) होने की आवश्यकता पर शिक्षा देने के लिए इस अवसर का इस्तेमाल किया। ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे, वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा'' (मरकुस 10:15)।

यहां शायद हमें यह ध्यान दिलाना आवश्यक है कि बच्चों को आशीष देने की यीशु की मर्मस्पर्शी घटना बच्चों के तथाकथित ''बपतिस्मे'' को उचित नहीं ठहराती। बिल्कुल विपरीत, इस अवसर पर मसीह के शब्दों का अर्थ है कि बच्चे जन्म के समय पवित्र और निष्कलंक होते हैं। उन्हें स्वर्ग के लिए तैयार करने के लिए मनुष्यों के बनाए किसी समारोह की आवश्यकता नहीं होती।

धन के विषय में?
(मत्ती 19:16-26; मरकुस 10:17-27; लूका 18:18-27)

एक धनवान को चुनौती (मत्ती 19:16-22; मरकुस 10:17-22; लूका 18:18-23)

बच्चों के लिए प्रार्थना करने के बाद, यीशु ने यरूशलेम का अपना दौरा आरम्भ किया (मत्ती 19:15)। फिर, उसे रोका गया-इस बार एक शानदार सवाल करके एक जवान ने रोका (मरकुस 10:17)। इस व्यक्ति को आम तौर पर ''जवान हाकिम'' कहा जाता है। किसी भी पद में उसे इस प्रकार नहीं दिखाया गया है; परन्तु लूका 18:18 हमें बताता है कि वह एक हाकिम था,[23] मत्ती 19:20, 22 हमें सूचित करता है कि वह जवान था और सुसमाचार के तीनों समानान्तर वृत्तांतों से संकेत मिलता है कि वह काफ़ी धनवान था (लूका 18:23; देखें मत्ती 19:22; मरकुस 10:22 भी देखें)।

धनवान, हाकिम यीशु के ''पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उस से पूछा, हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं?'' (मरकुस 10:17)।[24] मसीह ने ''उत्तम'' शब्द से उत्तर देना आरम्भ किया: ''तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर'' (मरकुस 10:18)। जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं, यीशु परमेश्वर होने का इनकार नहीं कर रहा था, बल्कि वह उस जवान को ''उत्तम'' शब्द का अर्थ समझाने की कोशिश कर रहा था। यदि उसे समझ होती कि मसीह सचमुच ''उत्तम'' है, तो उसे पता होना आवश्यक था कि वह देह में परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1, 14; मत्ती 1:23)। इसे दूसरे ढंग से कहें, तो मसीह उस व्यक्ति में विश्वास डालने की कोशिश कर रहा था-ऐसा विश्वास, जो शीघ्र मिलने वाली चुनौती का सामना करने के लिए आवश्यक था।

फिर मसीह ने अनन्त जीवन का अधिकारी होने के प्रश्न का उत्तर दिया। उसने उस व्यक्ति का ध्यान मूसा की व्यवस्था पर दिलाया, जो उस समय प्रभावी थी।[25] विशेषकर,

उसने दस में से पांच आज्ञाओं की बात की: ''तू आज्ञाओं को तो जानता है, कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना, और चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना'' (लूका 18:20; देखें निर्गमन 20:12-16; व्यवस्थाविवरण 5:16-20)।[26] अन्य शब्दों में, ''यदि तू अनन्त जीवन का अधिकारी होना चाहता है, तो वही कर जो परमेश्वर कहता है।'' हाकिम ने उत्तर दिया, ''हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं''; ''अब मुझ में किस बात की घटी है?'' (मरकुस 10:20; मत्ती 19:20ख)।

मसीह ने, जो मनुष्य के हृदय में झांक सकता है, भलाई की बड़ी क्षमता और सही करने की इच्छा देखी। मरकुस ने लिखा है कि ''यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया'' (मरकुस 10:21क)। वह एक विशेष जवान था। इसलिए प्रभु ने उसे बताया कि ''तुझ में एक बात की घटी है;[27] जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा (देखें मत्ती 6:19-21) और आकर मेरे पीछे हो ले''[28] (मरकुस 10:21ख)।

आम तौर पर यह माना जाता है कि ''जो कुछ तेरा है उसे बेचकर कंगालों को दे'' चेला बनने की सम्पूर्ण शर्त नहीं है।[29] यदि ऐसा है, तो यीशु ने जवान हाकिम को ये निर्देश क्यों दिए? इसकी कम से कम दो सम्भावनाएं हैं:

(1) मसीह ने उस व्यक्ति के मन में झांका, उसने देखा कि उसकी मुख्य समस्या लोभ थी। मैंने पहले कहा था कि यीशु ने दस में से *पांच* आज्ञाओं को दोहराया था-पर उन में से अन्तिम *छह* को एक इकाई माना जाता है (इस बात को संक्षिप्त करते हुए कि अपने साथी से कैसा व्यवहार करना चाहिए)। यीशु ने इन छह में से कौन सी आज्ञा नहीं दोहराई। दसवीं आज्ञा कि ''तू किसी के घर का लालच न करना'' (निर्गमन 20:17; व्यवस्थाविवरण 5:21)।[30] यह चूक जान-बूझकर की गई लगती है; स्पष्टतया उस हाकिम और अनन्त जीवन के बीच लालच ही रुकावट बना हुआ था। मसीह ने पहले ज़ोर दिया था कि एक चेले के लिए *किसी भी* ऐसी वस्तु को छोड़ना आवश्यक है, जो उसे वह बनने से रोकती है (देखें मत्ती 5:29, 30; 18:8, 9)। सब कुछ बेचने और कंगालों को देने की आज्ञा विश्वव्यापी नहीं है, परन्तु यह उन सब पर लागू होती है, जिनकी आशा ''चंचल धन'' पर लगी हुई है (1 तीमुथियुस 6:17)।

(2) हमने ध्यान दिया है कि यीशु ने इस व्यक्ति से प्रेम किया और उसमें क्षमता देखी। उस जवान हाकिम के लिए सब कुछ बेचने और उसके पीछे होने की प्रभु की आज्ञा सम्भवतया पूर्णकालिक चेला बनने की बुलाहट थी, जिसके लिए सब कुछ छोड़ना आवश्यक था (इस कहानी का अगला भाग देखें: मत्ती 19:27)।[31]

उस जवान ने मसीह की चुनौती का उत्तर कैसे दिया? लूका ने लिखा है कि ''यह सुनकर वह बहुत उदास हुआ'' (लूका 18:23क)। ''इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था'' (मरकुस 10:22)। वह अनन्त जीवन चाहता था, पर इतनी कीमत चुकाकर नहीं।

सब धनवानों के लिए चुनौती (मत्ती 19:23-26;
मरकुस 10:23-27; लूका 18:24-27)

इस व्यक्ति को जाता देखकर (लूका 18:24) यीशु का मन अवश्य भारी हुआ होगा। उसने अपने चेलों से कहा, ''धनवानों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!'' (मरकुस 10:23)। मुख्य बात पर लाने के लिए, उसने और कहा, ''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है!'' (मरकुस 10:25)। धार्मिक कहानियों के लेखकों द्वारा ''सुई के नाके'' का विचार भूल जाएं।[32] मसीह उसकी बात कर रहा था, जो ''मनुष्य से नहीं हो सकता'' (लूका 18:27): दैत्य आकार के जीव के बोझ को सिलने वाली सुई के छोटे से नाके में से निकलने को विवश करना। यीशु के ''चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, फिर किस का उद्धार हो सकता है?'' (मत्ती 19:25)। यहूदी लोग सम्पत्ति को परमेश्वर की स्वीकृति के चिह्न के रूप में देखते थे। उनका विचार था कि यदि किसी धनवान का उद्धार नहीं हो सकता, तो किसी का भी नहीं हो सकता। मसीह ने उत्तर दिया, ''मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है'' (मत्ती 19:26; देखें अय्यूब 42:2)। मसीह में एक ऊंट को सुई के नाके में से निकालने के लिए सिकोड़ने की क्षमता है। वह धनवान के मन को भी बदल सकता है-यदि वह धनवान विनम्र होकर उसके वचन को ग्रहण कर ले (देखें 1 तीमुथियुस 6:9, 10, 17-19)।

प्रतिफल का क्या?
(मत्ती 19:27-20:16; मरकुस 10:28-31; लूका 18:28-30)

बिना गुणों के प्रतिफल (मत्ती 19:27-29;
मरकुस 10:28-30; लूका 18:28-30)

यीशु ने उस जवान हाकिम को अपना धन त्याग कर उसके पीछे आने की चुनौती दी थी, परन्तु उस व्यक्ति ने यह निमन्त्रण ठुकरा दिया था। इसके विपरीत, मसीह के चेलों ने ऐसी बुलाहट को स्वीकार किया था (मत्ती 4:18-22; लूका 5:11, 27, 28)। इसलिए पतरस ने प्रभु से कहा, ''देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं: तो हमें क्या मिलेगा?'' (मत्ती 19:27)।

कुछ लोग आत्मिक प्रतिफलों की अवधारणा को ''परमेश्वर की आज्ञा मानने के घटिया'' प्रतिफल कहते हैं। प्रतिफल पाना प्रभु के पीछे चलने का हमारा मुख्य कारण नहीं होना चाहिए (देखें 1 कुरिन्थियों 13:1-3), परन्तु प्रतिफलों के बारे में बाइबल बहुत कुछ कहती है (मत्ती 5:12; 6:4, 5; 10:41, 42; 1 कुरिन्थियों 3:8; 2 यूहन्ना 8)। मसीह ने पहले प्रेरितों के लिए विशेष प्रतिफलों का उल्लेख किया: ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे'' (मत्ती 19:28)।

''नई उत्पत्ति'' यहूदियों द्वारा मसीहा के शासन के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द था। NIV में इस शब्द का अनुवाद ''सब बातों का नया होना'' किया गया है।[33] यह पृथ्वी पर भविष्य में मसीह के किसी काल्पनिक एक हज़ार वर्ष के राज्य की बात नहीं है, बल्कि यह वाक्यांश, मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने तथा जी उठने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन, मसीहा के राज्य अर्थात कलीसिया की स्थापना के लिए है (प्रेरितों 2)।[34] ध्यान दें कि ''नई उत्पत्ति/नया होना'' तभी होना था ''जब'' मनुष्य के पुत्र ने अपने सिंहासन पर बैठना था। यीशु को स्वर्ग में अपने पिता के पास वापस जाने के समय राजा बनाया गया था (प्रेरितों 2:33-35)। वह इस समय अपने राज्य (कुलुस्सियों 1:13) अर्थात कलीसिया (मत्ती 16:18, 19) पर राज कर रहा है (1 कुरिन्थियों 15:24-28)।

मसीह ने अपने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की कि वे ''इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करने के लिए, बारह सिंहासनों पर'' बैठेंगे।[35] अपने जीते जी उन्होंने अपने प्रचार के द्वारा इस्राएल का ''न्याय किया'';[36] एक दिन, वे यीशु की शिक्षा के परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन से इस्राएल (और सब का) ''न्याय'' करेंगे (यूहन्ना 12:48)।

फिर यीशु ने उसके पीछे आने वाले हर व्यक्ति को मिलने वाले सामान्य प्रतिफल बताए: ''और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़के बालों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उस को सौ गुणा मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा'' (मत्ती 19:29)। इस उत्साहित करने वाली प्रतिज्ञा में कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं।

(1) मसीह, किए जाने वाले बलिदानों की बात कर रहा था, जिनसे उसका काम बढ़ना था। मत्ती में ''मेरे नाम के लिए'' है (मत्ती 19:29)। मरकुस में ''मेरे और सुसमाचार के लिए'' है (मरकुस 10:29)। लूका में ''परमेश्वर के राज्य के लिए'' है (लूका 18:29)।

(2) ऐसे बलिदान करने वाले इसी जीवन में प्रतिफल पाएंगे। मरकुस के वृत्तांत के अनुसार, ऐसे लोग ''अब इस समय सौ गुणा पाएंगे'' (मरकुस 10:30)। ''सौ गुणा'' मां द्वारा जो अपने बच्चे से कहती है, ''मैंने तुझे सौ बार ऐसा न करने के लिए कहा है!'' इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। तौ भी सुसमाचार की आज्ञा मानने के कारण अपने सांसारिक परिवारों से कटने वाले लोग इस बात की गवाही दे सकते हैं कि यह बात सच है। परमेश्वर के परिवार (कलीसिया; 1 तीमुथियुस 3:15) में, उन्हें सैकड़ों भाई, बहनें और ''माताएं'' भी मिल जाती हैं, जो उनकी देखभाल करते हैं।[37]

(3) परन्तु यीशु किसी को झूठा वादा करके अपने पीछे आने के लिए नहीं कहता था। इसी लिए हमें इस प्रतिज्ञा में गम्भीर शब्द मिलते हैं: ''उपद्रव के साथ'' (मरकुस 10:30; देखें मत्ती 5:10-12; प्रेरितों 14:22; 2 तीमुथियुस 3:12)। इस जीवन में, मीठे के साथ कड़वा अवश्य मिलता है।

(4) सबसे बड़ा प्रतिफल तो स्वर्ग में होगा: ''... और परलोक में अनन्त जीवन'' (लूका 18:30)। मेरे मित्र ने मसीही होने की आशिषों पर एक संदेश तैयार किया है। वह

इसे ''यह सारा, और स्वर्ग भी'' नाम देता है!

बिना कमाए प्रतिफल (मत्ती 19:30-20:16; मरकुस 10:31)

मसीह ने प्रतिफलों पर अपनी शिक्षा समाप्त नहीं की थी। उसके चेलों के लिए (हमारी तरह) एक और सिद्धांत समझना आवश्यक था। प्रेरितों के बलिदान और प्रभु के साथ उनके विशेष सम्बन्ध के कारण, उन्होंने यह मान लिया होगा कि प्रतिफल मिलने के समय वे अपने आप ही ''पहले'' होंगे। यीशु ने उन्हें एक सिद्धांत याद दिलाया, जो उसने पहले बताया था (देखें लूका 13:30): ''परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे'' (मत्ती 19:30)। फिर उसने वह बात कही, जिसे नील लाइटफुट ने इस विचार को लागू करने के लिए ''सब दृष्टांतों में से सबसे उलझाने वाली''[38] कहा है (देखें मत्ती 20:16)।

मत्ती 20:1-16 में, यीशु ने एक ''गृहस्थ'' की कहानी बताई ''जो सवेरे [लगभग प्रात: 6 बजे] निकला कि अपने दाख की बारी में मजदूरों को लाएगा'' (मत्ती 20:1)। दाख की कटाई का समय अगस्त के अन्त या सितम्बर के आरम्भ में होता था। अंगूर पक जाने पर यह आवश्यक होता था कि उन्हें उसी समय उतार लिया जाए। खेत का स्वामी बाज़ार में किसी जगह गया होगा (देखें आयत 3), जहां काम की तलाश में लोग जमा थे।[39] उसने वहां मिलने वाले लोगों को भाड़े पर लिया और उन को ''एक दीनार रोज़ पर ठहरा'' लिया (आयत 2)।[40]

उसे और काम करने वालों की आवश्यकता थी, इसलिए उसने फिर ''पहर एक दिन चढ़े [लगभग 9 बजे प्रात:]'' (आयत 3), और फिर ''दूसरे और तीसरे पहर के निकट [दोपहर और लगभग 3 बजे]'' (आयत 5) देखा। हर बार और मजदूरों को लेकर, उसने उनसे प्रतिज्ञा की कि ''जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा'' (आयत 4)। अन्त में उसने ''एक घण्टा दिन रहते'' [लगभग 5 बजे] देखा और लोगों को ''खड़े पाया'' (आयत 6)। जब उसने पूछा कि ''तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े रहे?'' तो उनका उत्तर था, ''इसलिए कि किसी ने हमें मज़दूरी पर नहीं लगाया।''[41] उसने उन्हें ''दाख की बारी में'' जाने को कहा (आयत 7)।

''सांझ को'' (लगभग 6 बजे), खेत के स्वामी ने मज़दूरों के सरदार को उन्हें पैसे देने के लिए कहा (आयत 8)। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, भाड़े पर लगाए गए मज़दूरों को हर-दिन के अन्त में मज़दूरी देना आवश्यक था (लैव्यव्यवस्था 19:13; व्यवस्थाविवरण 24:15)।

दिन भर काम करने वालों को यह देखकर निराशा हुई कि एक घण्टा काम करने वालों को भी उतने ही पैसे दिए गए, जितने उन्हें दिए गए (मत्ती 20:9, 10)। जब वे इस पर बुड़बुड़ाने लगे (आयतें 11, 12), तो खेत के स्वामी ने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें उतना ही दिया गया था, जितना उनसे ठहराया गया था-और दूसरों को अपनी इच्छा के अनुसार देना उसका अधिकार था (आयतें 13-15[42])।

यह दृष्टांत लोगों को मसीही बनने के लिए ''अन्तिम घड़ी'' की प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए *नहीं* कहा गया। एक घण्टा पहले काम करने के लिए बुलाए गए मज़दूर तुरन्त काम करने लगे थे। यह बुढ़ापे में राज्य में आने की योजना बनाने के लिए हर वर्ष टालने वाले लोगों की तरह नहीं था। प्रतीक्षा करना हमेशा खतरनाक होता है। पहली बात तो यह कि जो अन्तिम घड़ी की प्रतीक्षा करते हैं, वे इतनी देर तक जीवित नहीं रह सकते। कहा गया है कि जो लोग एक घण्टा पहले मसीही बनने की उम्मीद करते हैं, वे डेढ़ घण्टा पहले मर जाते हैं। दूसरी बात, यदि वे इतना समय जीवित भी रहें, तो वे इतना कठोर हो सकते हैं कि सुसमाचार के प्रति दुराग्रही हो जाएंगे (देखें इब्रानियों 3:13; 6:6)। जैसे ही व्यक्ति को सुसमाचार के द्वारा बुलाया जाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14), उसके लिए उसी समय मानना आवश्यक है।

दूसरी ओर, दृष्टांत प्रेरितों को और पहले पहल आने वाले मज़दूरों को याद दिलाने के लिए कहा गया *था* कि ''जितना काम, उतना वेतन'' के आधार पर प्रतिफल नहीं दिया जाएगा। प्रतिफल कमाए नहीं जाते, बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दया के आधार पर दिए जाते हैं।

लोगों द्वारा राज्य में ''पहले'' माने जाने वाले लोग वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में ''अन्तिम'' हो सकते हैं, विशेषकर यदि उन्हें लगता है कि वे और पाने के हकदार हैं-जैसे दृष्टांत में पहले चार घण्टे में काम करने वाले मज़दूर थे। इसके विपरीत, राज्य में अनावश्यक (''अन्तिम'') लगने वाले परमेश्वर के अनुमान में ''पहले'' हो सकते हैं (मत्ती 20:16)।

सारांश

यीशु ने तलाक, बच्चों, धन और प्रतिफलों पर पूछे गए या उनका संकेत देने वाले प्रश्नों का उत्तर दिया।[43] आपके मन में जो भी प्रश्न हों, वे इन प्रश्नों से अधिक कठिन नहीं होंगे। उनका उत्तर परमेश्वर के वचन में कहीं न कहीं है। यदि आपका कोई प्रश्न है, तो आप उसे किसी ऐसे व्यक्ति से पूछ सकते हैं, जिसे आप से अधिक ज्ञान है (देखें प्रेरितों 8:31)।[44] आप अपने प्रश्न को लिखकर पवित्र शास्त्र को पढ़ना और इसका अध्ययन करना जारी रख सकते हैं। एक दिन बाइबल में अपने प्रश्न का उत्तर पाकर आपको सुखद आश्चर्य होगा।[45] मुझे आशा है कि आप हमारे पाठ के इस विचार को कभी नहीं भूलेंगे कि प्रश्न पूछना अच्छा है।

नोट्स

अन्य सम्भावित शीर्षक ''प्रश्न और उत्तर'' और ''प्रश्न, प्रश्न, प्रश्न'' हो सकते हैं।

विवाह तथा तलाक के बारे में प्रभु की बात पर गम्भीर शिक्षा की आवश्यकता है। अलग ढंग के लिए, अगले पाठ ''तो आप विवाह करने की सोच रहे हैं?'' पर प्रवचन नोट्स देखें। इसी सामग्री का इस्तेमाल करते हुए, एक और ढंग होगा ''तलाक की कचहरियों से बाहर कैसे रहें।''

यीशु और बच्चों के वृत्तांत की संक्षिप्ता के बावजूद, एक सर्वेक्षण में सुसमाचार के वृत्तांतों में इसे सबसे पसन्दीदा कहानी पाया गया। आप घर तथा कलीसिया में बच्चों के प्रशिक्षण के महत्व पर ज़ोर देते हुए ''यीशु और बच्चे'' पर वचन सुना सकते हैं। यदि आपने इस विषय पर पहले काम नहीं किया है तो बच्चों जैसे होने पर बोलने के लिए इस कहानी का इस्तेमाल किया जा सकता है।

''तो आप विवाह करने की सोच रहे हैं?'' टिप्पणियों के बाद इस पुस्तक में जवान हाकिम पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति होगी। उस पाठ के लिए एक वैकल्पिक शीर्षक ''तुझ में एक बात की घटी है'' हो सकता है। विश्वासी अनुयायियों को मिलने वाली आशिषों पर यीशु के वचन (मत्ती 19:29) ''यह सब, और स्वर्ग भी'' पर प्रवचन हो सकता है। आप ''यीशु द्वारा कहे गए सबसे उलझाने वाले दृष्टांत'' अर्थात दाख की बारी के मज़दूरों के दृष्टांत के प्रचार कर सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]मत्ती और मरकुस दोनों ने यीशु की ''पलिश्तीन के सभी भागों में अन्तिम सेवकाई'' के अधिकतर भाग को छोड़ दिया है। उनके वृत्तांत गलील से पिरिया (''गलील से ... यरदन के पार'') चले जाते हैं (मत्ती 19:1; मरकुस 10:1)। वहां वे उसकी सेवकाई के संक्षिप्त विवरण देते हैं (मत्ती 19:2; मरकुस 10:1)। फिर वे मसीह के यरूशलेम का आन्तिम दौरा आरम्भ करने के समय कहानी शुरू कर देते हैं। [2]''आवश्यकता: व्यवहार में बदलाव की'' पाठ देखें। [3]तलाकनामे का एक उदाहरण डब्ल्यू. डब्ल्यू. डेवीस, ''डायवोर्स,'' *इन्टरनेशनल बाइबल स्टैंडर्ड इन्साइक्लोपीडिया,* सामा. संस्क. जेम्स ओर्र (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1939), 2:864 में दिया गया है। [4]एक और सम्भावित खतरे पर विचार करें: यीशु पिरिया में था, जो हेरोदेस का इलाका था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने तलाक पर शिक्षा देकर हेरोदेस की पत्नी को नाराज़ कर दिया था जिसके बदले में उसे अपना सिर कटाना पड़ा था। [5]मरकुस का प्रबन्ध मत्ती से थोड़ा अलग है। यह उन स्वतन्त्र गवाहों का ढंग है, जो आवश्यकताओं के साथ सहमत है और विवरणों में थोड़ा बहुत अन्तर रखते हैं। सामान्य की भांति, दोनों वृत्तांत विरोधाभासी होने के बजाय एक-दूसरे के पूरक हैं। पाठ का यह भाग मुख्यतया मत्ती के वृत्तांत से लिया गया है। [6]मत्ती 19:4-6 पर संक्षिप्त चर्चा के लिए, पृष्ठ 40 पर दिए गए ''तो आप विवाह करने की सोच रहे हैं?'' प्रवचन नोट्स देखें। [7]इस पाठ में व्यवस्थाविवरण 24:1-4 पर चर्चा करने के लिए बहुत सीमित स्थान है। याद रखें कि इन आयतों में दिए गए नियम तलाक को प्रोत्साहित करने के लिए नहीं, बल्कि इसे देने के सम्बन्ध में थे। यह भी याद रखें कि पुराने नियम की आयतें उस वाचा का भाग हैं जो यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने पर हटा ली गई थीं। [8]टीकाकारों ने कई अनुमान लगाए हैं कि इस्राएलियों के मन की कठोरता ने परमेश्वर को तलाक की अनुमति देने के लिए कैसे मना लिया। अपनी शिक्षा के लिए चेलों को यीशु के उत्तर के बारे में एक अनुमान है: ''ब्याह करना अच्छा नहीं'' (मत्ती 19:10)। शायद परमेश्वर को मालूम था कि आत्मिक तौर पर परिपक्व इस्राएली विवाह के लिए जीवन भर समर्पित रहने के बजाय व्यभिचार में रहना पसन्द करेंगे। [9]मत्ती 19:8 यहूदियों की बात करता है, जबकि प्रेरितों 17:30 अन्यजातियों की बात करता है; पर सिद्धांत वही है। [10]मत्ती 19:3-9 पर अतिरिक्त चर्चा के लिए, इस पुस्तक में आगे ''तो आप विवाह करने की सोच रहे हैं'' पाठ देखें।

[11]मरकुस 10:10 में है कि वे ''घर में'' थे। रास्ते में स्पष्टतया कई बार उन्हें रात बिताने के लिए घरों में आमन्त्रित किया जाता था। [12]देखें विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली

स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 197. [13]मरकुस ने शायद स्त्रियों के अपने पतियों को तलाक देने पर शिक्षा इसलिए शामिल की क्योंकि उसका विवरण अन्यजातियों (रोमियों) को ध्यान में रखकर लिखा गया था। ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 31 पर ''मरकुस की पुस्तक: मसीह, सेवक'' पाठ देखें। [14]टिप्पणी 8 देखें। [15]दुख की बात है कि उस समय के मूर्तिपूजक संसार में यह आम बात थी। [16]इसका अर्थ यह नहीं है कि कुंवारा होना विवाहित होने से अधिक पवित्र है। इब्रानियों 13:4 कहता है कि ''विवाह सब में आदर की बात समझी जाए।'' पौलुस के अनुसार, विश्वास से त्याग करने वालों की एक विशेषता यह होनी थी कि लोगों ने ''ब्याह करने से रोकना'' था (1 तीमुथियुस 4:3)। [17]''बच्चों पर संक्षिप्त चर्चा उस बात की ओर ध्यान दिलाती है, जहां तीनों समानांतर पुस्तकें एक-दूसरे के और समानांतर हो जाती हैं और पृथ्वी पर मसीह के कार्य की कहानी के अन्त तक रहती हैं'' (रॉबर्ट डंकन कल्वर, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* [ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976], 196-97)। [18]जब यीशु बालक था, शमौन ने उसे गोद में लेकर प्रार्थना की थी (लूका 2:28-32)। [19]यीशु ने इससे पहले एक बच्चे को गोद में लिया था (मरकुस 9:36)। [20]जिस पर प्रार्थना की जा रही होती थी उस पर ''हाथ रखना'' नई बात नहीं थी, इससे मानवीय स्पर्श और प्रार्थना की व्यक्तिगत भावना की निकटता मिल जाती थी। जब मैं किसी रोगी के लिए प्रार्थना करता हूं, तो मैं आम तौर पर उस पर हाथ रख देता हूं।

[21]एच. आई. हेस्टर *द हार्ट आफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 180. [22]कल्वर, 196. [23]क्या इसका अर्थ यह है कि वह जवान आराधनालय में ''हाकिम'' था (मरकुस 5:36), या इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह महासभा का सदस्य था? (''सरदार'' निकुदेमुस, महासभा का एक सदस्य था [यूहन्ना 3:1; 7:45, 50]।) हम नहीं जानते। [24]मत्ती के वृत्तांत में उस जवान का प्रश्न यह था कि उसे कौन सा ''भला काम'' करना चाहिए (मत्ती 19:16)। प्रश्न पूछने वाले ने प्रभु को सम्बोधित करने और यह पूछने में कि उसे क्या करना चाहिए ''भला'' शब्द का इस्तेमाल दो बार किया होगा। [25]आज इस प्रश्न का उत्तर अलग दिया जाएगा, क्योंकि हम यीशु की मृत्यु के बाद के समय में रहते हैं। तौ भी मूल सिद्धांत वही रहेगा कि उत्तर परमेश्वर के वचन में ही मिलता है। [26]मरकुस के वृत्तांत में ''छल न करना'' जोड़ा गया है (मरकुस 10:19)। मत्ती के वृत्तांत में लैव्यव्यवस्था 19:18ख से ''अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना'' जोड़ा गया है। यह वाक्य दस आज्ञाओं में से अन्तिम छह के सार के रूप में देखा जाता है। [27]मत्ती के वृत्तांत में ''यदि तू सिद्ध होना चाहता है ... '' है (मत्ती 19:21)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''सम्पूर्ण'' या ''सिद्ध'' मनुष्यों पर लागू करने पर आत्मिक सम्पूर्णता या परिपक्वता की बात करता है। [28]''मेरे पीछे हो ले'' यीशु की सभी शर्तों का सार है (मत्ती 16:24)। [29]कलीसिया की स्थापना के बाद, कई बार मसीही लोगों ने दूसरे मसीहियों की सहायता के लिए अपनी सम्पत्ति बेच डाली (प्रेरितों 2:44, 45; 4:32-37); पर यह शर्त नहीं, बल्कि स्वेच्छा से था (प्रेरितों 5:3, 4)। [30]लालच पर पुराने नियम की आज्ञा में किसी दूसरे की वस्तु की बुरी नीयत से इच्छा करना था। परन्तु यीशु ने व्यक्तिगत सम्पत्तियों के लिए बुरी इच्छा को जोड़ने के लिए इस अवधारणा को विस्तार दिया (देखें लूका 12:13-15; आयत 15 में अनुवादित शब्द ''लोभ'' का अनुवाद प्राय: ''लालच'' होता है)।

[31]यीशु अपनी सेवकाई के अन्त तक पूर्णकालिक चेलों के लिए लोगों की भर्ती करता रहा (देखें लूका 14:33)। [32]''लॉर्ड जॉर्ज न्यूजैंट (1845-6) ने यह व्याख्या आरम्भ की कि यीशु ने एक नगर के दो फाटकों की बात की थी, बड़ा फाटक बोझ के दैत्यों के लिए और छोटा पैदल चलने वालों के लिए था'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 547)। यह ''व्याख्या'' (जिसका वास्तव में कोई आधार नहीं है) धार्मिक कहानियों के लेखकों, विशेषकर उन से जो बाइबल की शिक्षा को कोमल बनाने के प्रयास में हैं, ली गई थी। [33]इस शब्द का इस्तेमाल तीतुस 3:5 में एक मसीही बनने के लिए किया गया है, जब सभी वस्तुएं नई हो जाती हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। [34]इससे मिलती-जुलती एक स्थिति में, लूका में ''मेरे राज्य में'' (लूका 22:30) है जबकि मत्ती में ''नई उत्पत्ति से'' है (मत्ती 19:28)। [35]नया नियम सिखाता है कि कुछ अर्थ में *सभी* मसीही यहां और अनन्तकाल में मसीह के साथ ''राज'' करते हैं (प्रकाशितवाक्य 5:10; 2 तीमुथियुस 2:12)। नया नियम भी सिखाता है कि मसीही लोग सम्भवतया अपने भक्तिपूर्ण जीवनों तथा परमेश्वर के

वचन की शिक्षा देने से ''संसार का न्याय'' करते हैं (1 कुरिन्थियों 6:2)।[36]यानी, प्रेरितों ने दिखाया कि इस्राएली (यहूदी) लोग इस्राएल के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं कर रहे थे (उदाहरण के लिए, देखें रोमियों 9:6, 7)। कुछ लोगों का विचार है कि इस पद में ''इस्राएल'' आत्मिक इस्राएल (कलीसिया) को कहा गया है, और यह पद उस अधिकार की बात है, जो प्रेरितों को कलीसिया पर था-परन्तु ''न्याय करना'' के लिए नकारात्मक मिलान संदर्भ में उपयुक्त है।[37]इस पद में छोड़े गए घरों और भूमि की जगह ''सैकड़ों गुणा'' मिलने की भी बात है। यद्यपि इसे शब्दश: नहीं लिया जाना चाहिए, पर यह सच है कि मसीही व्यक्ति को ''घर और भूमि'' मिलेगी जहां संसार में कहीं भी जाने पर मसीह की देह के दूसरे सदस्यों द्वारा उसका स्वागत किया जाए।[38]नील आर. लाइटफुट, *द पैरेबल्स ऑफ़ जीज़स,* पार्ट 2 (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 52. यीशु का दृष्टांत ''उलझाने वाला'' है, क्योंकि दृष्टांत में बताए गए वेतन का इस्तेमाल किसी मानवीय नियोक्ता द्वारा देने की उम्मीद नहीं की जा सकती-पर परमेश्वर मनुष्यों के नियमों का बंधा नहीं है (यशायाह 55:8, 9)।[39]यह अमेरिका में आम बात थी और अभी भी अमेरिका के तथा संसार के कई अन्य भागों में ऐसा ही होता है।[40]''दीनार'' चांदी का एक छोटा रोमी सिक्का होता था। इस पद से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इसका उस समय किसी मज़दूर को सामान्य मज़दूरी देने के लिए इस्तेमाल होता था।

[41]हर बार, स्वामी ने अलग-अलग बाज़ारों में देखा होगा।[42]आयत 15 ''बुरी दृष्टि'' की बात करती है। जो मूल में स्वार्थ, लोभ और ईर्ष्या की इब्रानी अभिव्यक्ति थी (नीतिवचन 28:22)।[43]आप इन विषयों पर यीशु की शिक्षा को संक्षिप्त कर सकते हैं।[44]यदि उपयुक्त हो तो आप अपनी क्लास के सदस्यों से यह पूछने के लिए रुक सकते हैं कि यदि वे बाइबल से सम्बन्धित कोई प्रश्न पूछना चाहें तो पूछ सकते हैं।[45]सभी प्रश्नों का उत्तर इस जीवन में नहीं दिया जाएगा। कुछ बातें, परमेश्वर ने प्रकट करना उपयुक्त नहीं समझा (देखें व्यवस्थाविवरण 29:29); पर जो कुछ भी हमारे जानने के लिए *आवश्यक* है, वह बाइबल में बता दिया गया है। एक दिन जब हम प्रभु की उपस्थिति में खड़े होंगे, तो सब बातें स्पष्ट हो जाएंगी।